वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 30	Year 3	Volume 6	March 2015 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

जीने की राह

सूर्य चन्द्र के स्वस्थी पथ पर हे प्रभु चलते रहें

दानी, ध्यानी, आहिंसक बन सत्संग सदा करते रहें।।

यह संदेश ऋग वेद के मन्त्र में है जिसका भाव है कि हे ईश्वर, हम पर ऐसी कृपा करें कि जैसे सूर्य और चन्द्रमा सारे संसार और प्राणीजगत का कल्याण अपनी किरणों द्वारा करने मे लगे हुये हैं, उसी तरह हम भी बिना किसी भेद भाव के दूसरों के कल्याण में लगे रहें। यह परोपकार तभी संभव है जब हम दानी बने, आप का ध्यान करके आप के इश्वरीय गुणों को धारण करे, किसी भी तरह की हिंसा न करें और इन साधनों द्वारा सत्संग में ही रहें।

May we follow and traverse the path of benevolence like the Sun and the Moon and achieve this by remaining in a good company which is possible with charities, by communing with You and following nonviolent and peace generating methods.

बात 1916 ई की है। महात्मा हंसराज पर्वतीय यात्रा करते करते पैदल ही श्रीनगर पहुंच गये। वहां के सालाना उत्सव में आपके हृदयस्पर्शी व्याख्यान हुऐ। जब चलने लगे तो अधिकारियों ने मार्ग व्यय के लिये 200 रू दिये। महात्मा हंसराज ने यह कहकर लेने से इन्कार कर दिया कि मैं पैदल चलकर आया हूं। मुझे मार्ग व्यय लेने का कोई अधिकार नहीं। सत्य है, निष्काम सेवा है, धन से मोह नहीं। यही बातें व्यक्ति को महात्मा बना देती है। यही कल्याण मार्ग है और यही है श्रेय मार्ग।

इस मन्त्र के तीन भाग हैं। पहले भाग में कहा गया है हम दूसरों के कल्याण में लगे रहें। जब हम अपने जीने का ढंग ऐसा बना लेते हैं तो हम कह सकते हैं कि हम कल्याणकारी मार्ग पर चल रहे हैं। यह कल्याणकारी मार्ग ही हमें मोक्ष अर्थात परम आन्नद तक ले जा सकता है। यह कल्याणकारी मार्ग ही हमारे इस लोक को और परलोक को सुधारने वाला होता है। हम अपना भला तो करते है पर दूसरों का भी भला करते हैं और ऐसे करते हुये यश के पात्र बनते है। इसी मार्ग को गुरू नानक देव ने सच्चा मार्ग उचारा है।

गुरूवाणी में आया है——सुच्चे मार्ग चलदियां उस्तत करे जहान। अर्थात जो मानव सच्चे और कलयाणकारी मार्ग पर चलता है, उसकी प्रशंसा सारा संसार करता है।

कठोपनिषद में ऋषि यमाचार्य ने इस कल्याणकारी मार्ग को ही श्रेय मार्ग कहा है। ऋषि यमाचार्य निचिकेता को कहते हैं———दो मार्ग श्रेय और प्रेय **मनुष्य** को अपनी अपनी और आर्कषित करते है।। इन दो में श्रेय माग ही कल्याणकारी मार्ग है। दूसरा मार्ग प्रेय अच्छा और सुहावना तो लगता है पर वास्तव में यह **मनुष्य** को अच्छाई से दूर ले जाता है।

दूसरे भाग का अर्थ है कि जैसे सूर्य और चन्द्रमा सारे संसार और प्राणीजगत का कल्याण अपनी किरणों द्वारा करने मे लगे हुये हैं हम भी उसी तरह विना किसी भेद भाव के दूसरों के कल्याण में लगे रहें।

अग्नि का मूल स्त्रोत सूर्य है। सूर्य ही अपने और सौर जगत का जीवन ज्योति और प्राण है। उसकी उषमा और प्रकाश से रंगरूप और संसार की हर वस्तु दिखाई देती है।प्राणियों को जीवन शक्ति प्रदान करने के साथ साथ सूर्य में और भी बहुत से गुण है जो सूर्य की महानता को दर्शाते हैं। सूर्य महान दानी है जो कि अपनी उर्जा और प्रकाश का दान अरबों खरबों सालों से बिना किसी भेद भाव के दे रहा है। सूर्य और चन्द्रमा दोनो नियम पालकता के परिचायक भी है इसी कारण भगौलिक विज्ञान जैसे पंचांग है, इन को आधार भी माना जाता है। इस कारण जो सूर्य चन्द्रमा की भान्ति दूसरों को प्रकाश देता है और अपने जीवन में अनुशासन रखता है वही मनुष्य है और कल्याणकारी मार्ग का पथिक भी।

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

सूर्य के अनेक विलक्षण गुणों के कारण ही वेद बार बार हमें सूर्य का अनुसरण करने की प्रेरणा देते हैं। ऋग्वेद में एक अन्य स्थान पर आया है

तन्तु तन्वन, रजसो भानु मन्विहि

हे मनुष्य तू जीवन के ताने वाने को बुनते हुये आकाश के सूर्य का अनुसरण कर।

सामवेद भी कहता है,

अहं सूर्य इवाजिन

मैं सूर्य के समान हो जांउ। सूर्य में जो तेज है वह हम में आ जाये।

मन्त्र के अन्तिम भाग में तीन गुणों का वर्णन है जिन्हे धारण करने के लिये हम इन तीन गुणों के धारणकर्ता **मनुष्यों की संगत में रहने का प्रयत्न करें।**

सव से पहले हमें दानशील व्यक्ति के समीप रहने का यत्न करना चाहिये । उन लोगों को देखकर हमें भी दान करने की प्रेरणा मिलेगी, क्योंकि हम जानते हैं जैसी संगत वैसी रंगत। एक कहावत है Charity is the salt of riches दान देने से धन वैभव का निवास हमारे घरों में चिरस्थाई हो जाता है।

जिस दूसरे गुण की बात की गई है वह है अध्नता अर्थात जो हिंसा न करता हो। अगर हम स्वयं दुखी नहीं होना चाहते तो हमें भी किसी को मन, वचन और कर्म से दुखी नहीं करना चाहिये और न ही किसी का बुरा सोचना चाहिये।

तीसरा गुण है जानता अर्थात ज्ञानी बनें। ज्ञान ही हमें उचित —अनुचित के बारे में बताता है और ज्ञान के बिना अज्ञान और अंधकार को खत्म नहीं किया जा सकता। अतः जो भी यह तीन गुण दान देना, अहिंसा का पालन करना और ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को जारी रखेगा उस का कल्याण अवश्य ही होगा।

यही कल्याण का मार्ग है और यही श्रेय मार्ग है।

तरसेम कुमार आर्य

One life is all we have, no day that goes by ever comes back. Keep the candle of hope lighted and enjoy life in its full.

विचार

क्या पैसा ही असली सम्पदा है?

इस में कोई संदेह नहीं कि हम सभी पैसे से प्यार करते हैं और अधिक से अधिक धन पाना चाहते हैं। इस में भी कोई संदेह नहीं कि पैसे से ही दुनियादारी चल रही है। यह भी हम जानते हैं कि पैसे से लोगों का मिन्टो सैकिन्टो में मूड, रंग ढंग बदला जा सकता है। व्यापार में पैसे से ही बड़े बड़े अनुबन्ध किये जाते है और पैसा न होने के कारण यही अनुबन्ध टूटने के कागार पर आ जाते हैं। आज सहारा समूह के मालिक के पास लोगों से लिया धन वापिस करने के लिये प्रयाप्त राशी नही ंतो सलाखों के अन्दर बाकी अभियुक्तों के साथ दिन काट रहा है। अमेरिका सब से धनाडय देश है इसी कारण सब लोग उस के पिठठू हैं औरं उसको खुल कर उधार देते हैं। जापान और चीन जैसे देशों ने जम कर अमेरिका में निवेश किया हुआ। यही नहीं , जब से चीन के पास पैसा आया है, भारत के सभी पड़ोसी देश भारत की अपेक्षा चीन के नजदीक हो गये हैं ।पैसे का कमाल देखें खिलाड़ी जीते जताये मैच हार जाते हैं।

आज तो हाल यह है कि पैसे वाला समझता है कि उसका भगवान भी उसकी जेब में है। पैसा जेब में है तो मिन्टों में ही अपने देवता के दर्शन कर सकते है, चाहे तिरूपति बाला जी है या फिर वै**ष्णों देवी, मीलों तक चलने वाली** लाइन में लगने की आवश्यकता नहीं। कहने का अर्थ है कि पैसे वाला आदमी समझता है कि दुनिया की कोई ऐसी चीज नहीं जो उसके पैरों में नहीं। अपने प्रधानमन्त्री को ही देख लें, जब से प्रधानमन्त्री बनें हैं अमीरों के साथ अधिक नजर आते हैं, उनके हित के बारे में अधिक सोचते है और जिन की वोटों से प्रधान मन्त्री बने उनका ध्यान न के बराबर है।

पर वास्तविक सच्चाई यह है कि कि यह पैसा ऐक माया जाल है । जिसको वही समझ सकता है जो कि अध्यात्मवाद को जीवन का अंग बना लेता है। उदाहरण के लिये पैस से आलिशान बंगला तो आप खरीद सकते है पर एक खुशहाल परिवार या घर नहीं, आप खाने का हर पदार्थ खरीद सकते हैं पर भूख नहीं और न हीं सेहत, आप अपनी सुरक्षा के लिये चाहे सैकंड़ो हथियार लेस आदमी लगा लें पर जरूरी नहीं सुरक्षित महसूस करें, आप अपने मनोरंजन के लिये महंगी से महगीं चीजें खरीद कर भी यह सम्भव है कि आन्नदित या खुश महसूस न करें और खुशी की तलाश में भटकतें रहें या खालीपन महसूस कर ऐसी चीजों का सहारा लें जो कि

श्री अजीम प्रेमजी दुनिया के गिने चुने अमीर व्यक्तियो में है पर उनका विशेष स्थान इस लिए है कि उन्होने अपनी सम्पदा का बड़ा हिस्सा गरीबों की शिक्षा के लिए दान मे दिया है।

आपको और दुखी कर दें। कहते है कि पैसे से आप आलीशान बिस्तर तो खरीद सकतें है पर नींद नहीं। आप पैसे वाले हैं तो अच्छे जाने माने लोगों से सम्बन्ध हो सकते हैं पर यह ज़रूरी नहीं कि उनका प्यार और विश्वास भी मिल जाये या सच्चा मित्र मिल सके। **पैसा है तो आप संगीन अपराध कर के भी वकीलों की सहायता से कोर्ट कचहरी के न्याय से बरी हो सकते हैं पर ईश्वर के न्याय से नहीं। न ही पैसा हमारे पापों की सजा से बचा सकता है।**

इस लिये चाहे पैसे से सारी दनिया चल रही है या दुनिया के सब काम चल रहें हैं पर अध्यात्मवाद की खुराक के बिना आदमी पहले से भी अधिक गरीब महसूस करता है। पैसा शरीर का भोजन तो दे सकता है पर आत्मा का नहीं और जब तक आत्मा को उस का भोजन नहीं मिलता मनुष्य सब भौतिक सुख पाकर भी खोखला महसूस करता है। **न विद्**

तर्पणीयो मनुष्यः—— केवल लौकिक धन से ही मनुष्य तृप्त नहीं हो सकता। तृप्ति के लिये आत्मज्ञान भी उतना ही आवश्यक है।

पर इसका अर्थ यह नहीं कि पैसे को ठोकर मार दें या पैसा नहीं कमाना है । पैसा अवश्य कमाना है पर उसे एक साधन समझना है और उसका प्रयोग लोभ, आसक्ति और संग्रह करने की भावना को दूर रख कर, यह समझ कर करना है कि इस संसार की हर वस्तु इस ईश्वर की है जो कि मुझे उस ईश्वर ने अपने ओर दूसरों के कल्याण के लिये दी है। मैं इसका स्वामी नहीं हूं।.

वेद कहते है। शतहस्त समाहर—— हे मानव तू सैंकड़ो हाथों से कमा। तू ऐश्वर्यशाली बन। '' वयं स्याम पतयो रयीणाम— हमस ब प्रकार के धनो के अधिपति बने।

1——अग्निना रयिमश्नवत पोश्मेव दिवे दिवे।

यशसं वीरवत्वमम। ऋ

ऐ मानव ! तू खूब धन कमा, परन्तु तेरा धन आत्मा और शरीर की पुष्टी करने वाला, उत्तम कीर्ति को बढाने वाला व ऐसा धन हो, जिसे विद्वान व शूरवीर भी चाहते हैं। परन्तु साथ ही कहा है

हे ईश्वर हमें ऐश्वर्य व वैभव मिले पर साथ ही कुटिलतापूर्ण कर्मो से भी दूर रहें क्योकिं ऐश्वर्य व वैभव के साथ कुटिलतापूर्ण कर्म विनाश की और ले जाते हैं। हमारी बार — बार यही प्रार्थना है कि हमे **श्रेष्ठ** मार्ग पर ही चलाना। साथ में कहा है हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, सही ज्ञान और सही पथ प्रर्दशन के लिये हमें अच्छे परिपूर्ण विद्वानो व अच्छे आचरण वाले व्यक्तियों की संगति में ही रखें।

बादशाह जफर का इस बारे में एक सुन्दर शेर है,

जफर आदमी उसको न जानियेगा

चाहे कितना हो साहबे—फहमो —जका

जिसे ऐश में यादे खुदा न रहीं

जिसे तैश में खौफे खुदा न रही

धन बुरा नहीं हैं धन को पाकर ईश्वर को भुला देना बुरा है। उसका अनुचित प्रयोग बुरा है। धन के हानीकारक प्रभावों से बचने के लिये, यह बातें बताई गई हैं

1 इस संसार की कोई भी वस्तु केवल हमारे लिये नहीं है वल्कि सब के लिये है। महात्मा गान्धी के शब्दों में, ज़रूरत से अधिक जो भी सम्पदा हमारे पास है, उसका भगवान ने हमें केवल रक्षक बनाया हैं न की मालिक।

2 किसी भी दुनिया की चीज पर प्रयोजन रहित कब्जा बनाकर रखने से अच्छा है उस का आवश्यकता पूर्ती के लिये प्रयोग हो।

3 भौतिकवाद में खुशी तलाशना मृगतृष्णा की तरह है।

4 हमारे अच्छे कर्म ही हमें खुशी प्रदान कर सकते हैं।

5 धन एक नौकर के रूप में तो ठीक है पर जब हम इसे मालिक का रूप दे देते हैं तो बात बिगड़ जाती है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172—2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :—**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

सम्पादकिय

अरविन्द केजरीवाल का भारतीय राजनीती के क्षितज पर फिर से उदय

अरविन्द केजरीवाल की आम आदमी पार्टी की दिल्ली विधानसभा में शानदार विजय ने फिर से एक बार उन्हे भारतीय **राजनीती** के क्षितिज पर सामने ला खड़ा कर दिया है। अधिकतर लोग इस लिये खुश हैं क्योंकि वे सोचते है कि अरविन्द केजरीवाल उन्हीं में से एक है और वह उनकी समस्याओं को समझते है। विरोद्धी दल भारतीय जनता पार्टी की हार का मुख्य कारण भी यही बना कि वह कोई ऐसा नेता सामने नहीं ला सकी जो कि दिल्ली का ही हो और दिल्ली वालों के लिये ही सोचता हो। पार्टी ने सोचा कि जैसे लोकसभा के चुनाव के समय बाहर से थोपे गये नेता भी मोदी के नाम पर चुनाव जीत गये, इस बार भी ऐसा ही होगा।

1922 में गान्धी जी ने अपने समाचार पत्र **''यंग इंडिया''** में, इन सात बातों को पाप की श्रेणी में रखा था ––––––

1 बिना सिद्वान्तों के राजनीती,

2 बिना परिश्रम किये पैसा कमाना,

3 बिना चरित्र के ज्ञान अर्थात विद्वता,

4 मानवता से दूर विज्ञान,

5 बिना सेवा भाव के पूजा ,

6 संवेदना के बिना खुशी

7 और नैतिकता के बिना व्यापार।

उन्होने दरिद्रनारायण की सेवा को ही धर्म बताया था। भारत में पिछले 68 वर्ष में जो राजनीती रही है उस मे यह सभी सात बुराईयों का समावेश रहा है। यह नैतिक मूल्यों से दूर और समाजिक न्याय व आम व्यक्ति की सेवा भावना से विहीन रही। ऐसी हालत में अरविन्द केजरीवाल में लोगों को आशा कि किरण नजर आती है क्योंकि वह मूल्यों के साथ छलकपट किये बिना राजनिती व अपने सुखों व आरामों का त्याग कर ईमानदार शासन देना चाहते है। दूसरा वह शासन प्रक्रिया को सादा व कम खर्चीला रखना चाहते हैं जो कि बहुत अच्छी बात है।

मैं बाकी लोगों की तरह बहुत आशावादी नहीं हूं। हां उपर लिखी बातों से कुछ हालत सुधरेगी पर उतनी नहीं जितनी कि लोग अपेक्षा करते है। कारण सिर्फ एक ईमानदार आदमी के उपर आने से सब समस्यांऐं खत्म नहीं होती। नरेन्दर मोदी भी ईमानदार है पर जो पकड़ उनकी मुख्यमन्त्री के रूप में थी वह अभी तक प्रधानमन्त्री के रूप में नहीं, जो कि भारत जैसे बड़े और विविधता वाले देश में आसान भी नहीं। कुछ क्षेत्रों में उनका काम अच्छा है पर एक महत्वपुर्ण क्षेत्र की वह पूरी तरह अवेहलना कर गये और वह है आम व्यक्ति के जीवन के साथ जुड़ी आवश्यक चीजों की किमतो में नियन्त्रण। मैं यह भी जानता हूं कि महगांई कम करना अव हमारे देश में इतना

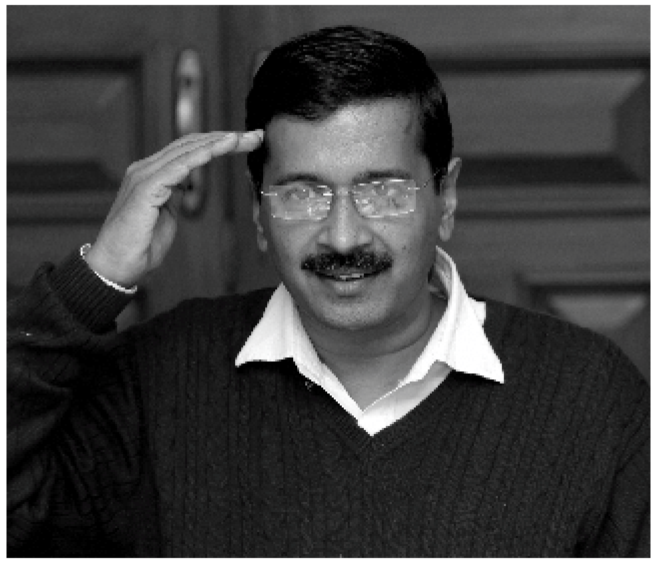

आसान नहीं है। कारण कोई भी किसी प्रकार का त्याग करने को तैयार नहीं, किसान अपने अनाज की किमतो में हर साल सुधार चाहता है, सरकारी मुलाजिम अपने महंगाई भते में बड़ोतरी चाहता है और जो निजी कार्यों में या गैर सरकारी क्षेत्रों में कार्यरत हैं वह अपनी सेवाओं के लिये बेहतर पराश्रमिक व लाभ चाहते हैं। उदाहरण के लिये जो रेड़ी वाला आज 20 रू किलो प्याज बेचकर जाता है उस में 10 रू उस का निजी लाभ और 5 रू व्यापारीयों की दलाली होती है। इस से कम बेचने पर उसका गुज़ारा नहीं । रेड़ी वाला 700रू से कम अगर ध्याड़ी बनाता है तो उसका इस शहर में गुजारा नहीं। ऐसे में यह सोचना कि कीमतें कम होगीं या मंहगाई घटेगी कोई व्यवहारिक नहीं लगता । हां अगर शासन ईमानदार और कम खर्चीला है तो लूट नहीं मचती।

यही बात कालेज खोलने की है। पहले लोग इन कामों के

लिये भूमी दान देते थे आज जब कि एक ऐकड़ भूमी की कीमत दिल्ली के आसपास 10 से 15 करोड़ है कोई भी दान नहीं देता। सरकार को भी यह भाव देकर ही लेनी पड़ेगी। यही नहीं हर पढ़ाने वाला सरकारी वेतनमान चाहता है। ऐसे में उच्च शिक्षा मुफत कहां से हो सकती है, जैसा कि आम जनता केजरीवाल से अपेक्षा कर रही है।

जिस बात को लेकर मैं अधिक आश्वस्त नहीं हूं वह है **भ्रष्टाचार को खत्म करने की बात। केवल ईमानदार नेता के होने से भ्रष्टाचार खत्म नहीं हो** जाता, उतना ही आवश्यक यह है कि जनता भी ईमानदार हो, जो कि मुझे अपने देश में नहीं लगता। यहां पर हम दूसरों को तो चाहते हैं ईमानदार रहे पर यह अपने पर लागू नहीं करना चाहतें। यह तभी सम्भव है जब हम चरित्र को महत्व दें। जिन देशों में **भ्रष्टाचार कम है वहां नेता ही नहीं, जनता भी कम भ्रष्ट होती है।** मैं यहां अपना निजी अनुभव देना चाहता हूं

एक बार थाइलैंड यात्रा के दौरान मैंनें और मेरे परिवार ने बैंकाक से 150 मील दूर पटाया नाम के शहर जाना था। हमने होटल से बैंकाक बस सटैंड के लिये टैक्सी ली। होटल से बस स्टैंड तक का किराया टैक्सी के मीटर पर 93 बाहट आया। मैंने 100 बाहठ का नोट टैक्सी वाले को दिया, उसने झट से 7 बाहट मुझे वापिस कर दिये ।हम घूम कर वापिस आये तो फिर बस सटैंड से होटल तक टैक्सी ली। होटल पहुंचने पर मैं हैरान था कि टैक्सी के मीटर पर 93 बाहट ही किराया था, एक बाहट कम या ज्यादा नहीं। यही नहीं, इस बार भी टैक्सी वाले ने झट से 7 बाहट मुझे बापिस कर दिये। आप सभी भारत में घूमते हैं, दिल्ली जाते हैं क्या आप दिल्ली के टैक्सी या थ्री वीलर वाले से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा कर सकते हैं। यही टैक्सी या थ्री वीलर वाले जब **भ्रष्टाचार** मुक्त शासन की अपेक्षा करें तो कुछ हजम नहीं होता और न ही ऐसा लगता है कि **अरविन्द केजरीवाल** इस दिशा में उतनी सफलता प्राप्त कर पायेंगे जो उनका सपना या चुनावी वायदा है। खैर **उनकी मन्शाऐं नेक है और जब मन्शाऐं नेक हों तो काम में कुछ सफलता तो मिलती ही हैं। ईश्वर उनको उनके कार्य में सफलता दे ।**

मैं यह समझता हू कि अरविन्द केजरीवाल को पहले यह प्रयोग दिल्ली में सफल कर के बताना चाहिये उसके बाद ही बाकी जगहं पंख फैलाने चाहिये। हां पंजाब में उनके जैसे दल की बहुत आवश्यकता है पर बहुत कुछ निर्भर करेगा कि वह दिल्ली में कितने सफल रहते है। बात कम खर्चीला शासन देने की है।

हां यह भी बहुत आवश्यक है कि मोदी सहयोग के खोखले आश्वासनों देने के स्थान पर पुलिस और दूसरे आवश्यक महकमें दिल्ली की सरकार को सोंप कर उदारता का परिचय दें जिस के लिये वे जाने जातें हैं। **9217970381**

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

जो व्यक्ति सब कर्मो को परमात्मा को अपर्ण करके और आस्क्ति को त्यागकर कर्म करता है वह व्यक्ति जल में कमल के पते की भान्ति पाप से लिप्त नहीं होता। कहने का तात्पर्य यह है कि संसार के सब पदार्थों को त्यागमय भाव से भोगो पर इनक` साथ आसक्त न हों

जो मनुष्य मान और अपमान में समान रहता है। मित्र एवं श्शत्रु को भी समान समझता है और जिस ने सब साकाम कर्मो का परित्याग कर दिया है, वही वस्तुत गुणातीत है। वह न तो सुख में बहुत प्रसन्न और न ही दुख में दुखी होता है। उसका मन स्थिर होता है।

गीता से

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

A lesson in religion

Bhartendu Sood

Sometime back when I was traveling by train from Delhi to Jaipur, I had a Tibetan monk sitting opposite me. Busy reading English newspapers, I was overwhelmed by an article by Dr APJ Abdul Kalam whose central point was: 'God is not to be looked for in a mosque or a temple. He is not to be fought over and sought in martyrdom as protagonists of different religions do in our country.' I became keen to know the reaction of the monk and passed on that page to him. He read it and while returning the paper, he smilingly nodded to convey that he too liked what Dr. Kalam had said. That prompted me to engage him in a discussion and I asked his views on religion. These are the insightful and inspiring things he said: “Well, to me, religion has meaning only if it improves the quality of our acts and we become better human beings. But sadly, that is not happening. Religion is used excessively to impart identity right from when a child is born and our emphasis on identity is driving one person away from the other; with the result, today humanity is divided into ethnic groups.

“It is really unfortunate that today religion appears to be at the root of global conflict and violence, whereas the right practice of religion should raise people above these barriers. To substantiate how religion, if followed in its true sense, can raise one above narrow considerations of race, personal prejudices, I'm sharing with you my true experience. Sometime back I was in our monastery in Bhutan where I spend most of my time. One day an unexpected guest arrived, a monk from Tibet. After making him comfortable, we were curious to hear about his life under Chinese domination.

“We thought our question would bring out his anger against the Chinese but it did not happen so. He told us that when he was in prison, initially his robes of a monk would incite the Chinese jailer and he'd inflict excesses on him with vengeance. But gradually, the Chinese officer's attitude towards him changed and rather he started loving him. The Chinese authorities taking cognizance of his report freed him after a few months. When asked how he felt to be free now, he replied that he missed the Chinese officials with whom he had developed a bond of love.

“Shocked and baffled, we looked at each other and turned to the head monk to see his reaction. The head monk got up, took the visitor in his embrace and said holding his face 'Amazing! Really amazing! We, staying in this monastery for so many years, could not become Buddhist, whereas you became one in prison.' This is religion!” **9217970381**

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है

कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगढ़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

प्रेम से ईश्वर के गुण गाया कर

प्रेमी बनकर प्रमे से ईश्वर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफला! झाडू रोज लगाया कर।।

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे, करता अपना आप रहा।।
प्रात समय उठ ध्यान कर, सत्संग में तू आया कर।
प्रेमी बनकर प्रमे से––––––––––

नर–तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म–जन्म के शुभ कर्मो का होता जब तक मेल नहीं
नर–तन पाने के लिये उतम कर्म कमाया कर।
प्रेमी बनकर प्रमे से––––––––––

पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या।
भूखा–प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या ।।
पहले सब से पूछ कर भोजन को तू खाया कर।
प्रेमी बनकर प्रमे से––––––––––

देख दया उस परमेश्वर की वेदों का जो ज्ञान दिया।
'देश' तू मन में सोच जरा कितना है क्ल्याण किया।।
सब कामों को छोड़कर उसका नाम ध्याया कर।
प्रेमी बनकर प्रमे से––––––––––

Know about Emperor Hemu

भारत के महान योद्धा, दिल्ली के अन्तिम हिंदू–सम्राट्

Hemu, a banya of the Dhunsar caste, was a greengrocer of Rewari in Haryana (letter "Emperor Hemu", November 5). Despite being a Hindu of a non-fighting race, he possessed military and administrative abilities. King Adil Shah made him a minister and commander of his army. Being an energetic and fiercely ambitious warrior, he had a strong desire to expel the Mughals from India, apparently in the interest of his weak and indolent king, but actually to establish Hindu raj. He captured Delhi from the Mughal governor and assumed the title of Raja Vikramjit. He remained emperor for some time and one can say that India was under the control of a Hindu king even when Mughals had already dug their heels.

He met Akbar and Bairam Khan on the historic field of Panipat with a large army and 1,500 elephants. He would have won the day, but a chance arrow struck him in the eye. He became unconscious. His army dispersed. Akbar severed his head from his body. His wife escaped into Mewat with his huge treasure. According to another version, he was caught at Bajara village near Agra. Hemu's old father was put to death on his refusal to embrace Islam.

गुरू नानकदेव का अपना ही ढंग था पाखण्डों के विरूध आवाज उठाने का

गुरू नानकदेव ने अपने जीवन में बहुत सी यात्रांऐ की । उनकी इन यात्राओं का उदेश्य लोगों में फैले अन्धविश्वास और पाखण्डों को दूर कर सच्चे एक ईश्वर के बारे में बताना होता था। ऐसी ही एक यात्रा में वह पुरी पहुंचे और समुद्र के तट पर भाई मर्दाना के साथ अपना डेरा लगाया।

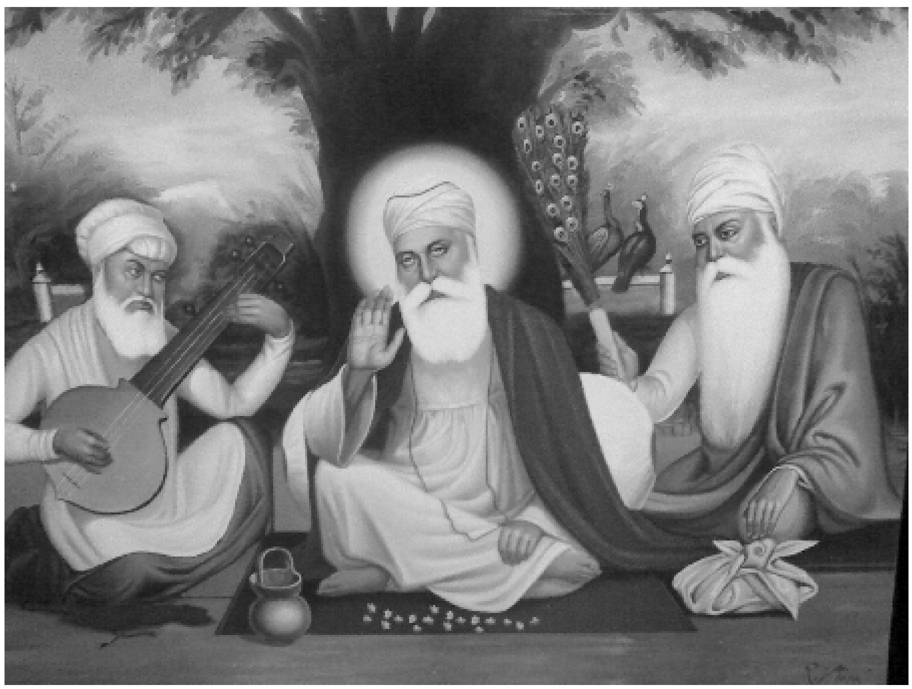

जब रात हो गई तो भाई मर्दाना क्या देखते हैं कि एक साधु ने रेत पर दरी बिछाई, अपने आगे एक तांबे का गढ़बी जैसा पात्र रख दिया और खुद ऐसी मुद्रा में बैठ गया कि उसका सिर पीछे उसके पैरों को छू रहा था और चेहरा आकाश की तरफ। आंखे उसने बन्द कर रखी थी। भाई मर्दाना ने जिज्ञासावश **गुरू नानकदेव से पूछा कि वह साधु इस मुद्रा में क्या कर रहा है?**। गुरू नानक देव ने कहा कि मैं तो सोने जा रहा हूं तुम खुद ही देखते रहो। कुछ पता लगे तो मुझे उठा देना। भाई मर्दाना जिज्ञासावश सो न सके और उस साधु की तरफ ध्यान सें देखते रहे। कुछ देर बाद लोगों के आने का सिलसिला शुरू हो गया। वे आते साधु को प्रणाम काते, उसके पात्र में पैसे डालते और वहीं बैठते जाते।

कुछ देर बाद गुरू नानक देव की आंख खुली तो मर्दाना झट से बोला--- गुरू देव --- देखो क्या हो रहा है। लोग आ रहें है, उस के पात्रे में चड़ावा चड़ा रहें है और बहुत वड़ी भीड़ उसको घेरे हुये है। मजे की बात यह है कि उसने तब से अपनी आंखे नहीं खोली और मुंह आकाश की तरफ ही है। आपके विचार में यह सब क्या है?

गुरू नानक देव मुस्करा दिये और बोले--मर्दाना, तुम जाकर किसी से पूछ क्यों नही लेते कि यह क्या माजरा है। मर्दाना झट से उन में से एक के पास गया और पूछा कि यह सब क्या है। उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि यह ब्राहम्ण बहुत पहुंचा हुआ है। सवेरे सूर्य के उदय होने पर आंखे खोलता है और बताता है कि स्वर्ग लोक में कल क्या हुआ।

मर्दाना ने उस व्यक्ति से पूछा कि क्या यह साधु यह भी बताता है कि ईश्वर को कैसे प्राप्त किया जाये। '' नहीं, इस बारे में नहीं बताता। वह तो यह बताता है कि देवता और अपस्रायें स्वर्ग में क्या कर रही थी और हमारा आज का दिन कैसा होगा। मैं रोज यहां यह सुनने आता हूं।

भाई मर्दाना यह सुनकर असम्जस में पड़ गया और और उसने गुरू जी को उठा कर जो कुछ देखा व सुना था सब बता दिया। गुरू जी उठे और उस साधु के पास जाकर जो पात्र उसने अपने आगे रखा हुआ था, उसे उठा कर उसकी पीठ के पीछे रख दिया और जा कर लोगों के बीच ही बैठ गये।

जैसे ही सूर्य उदय हुआा, उस साधु ने आहिस्ता आहिस्ता आंखे खोली, अपने आप को सीधा किया और अपने आस पास बैठे लोगा को, जो कि उसकी बातें सुनने के बहुत आतुर थे, देखकर बोला----- जो भी यहां है उनको मेरा आर्शीबाद। मुझे यह बताने में बहुत खुशी है कि स्वर्ग में बहुत हंसी खुशी और उत्सव का महोल है। **विष्णु** और ईन्द्र बहुत प्रसन्न मुद्रा

में आपस में बातें कर रहे थे। अपसराये खुशी से झूम रही थी। आज का दिन आप सब के लिये बहुत ही अच्छा रहेगा। अब कल फिर मिलेंगे। यह कह कर वह पैसों वाला पात्र उठाने के लिये आगे बढ़ा। पात्र को वहां न पा कर एक दम बहुत परेशान हो गया। और लोगों से पूछने लगा

तभी गुरू जी उठे और बोले––––**ऐसा लगता है कि स्वर्ग का तो पता रखते हो अपने आस पास का नहीं। अपने पीछे देखो, पात्र वहीं है।** साधु हैरान था और गुरू जी को घूर–घूर कर देख रहा था उसे पहली वार कोई ऐसा व्यक्ति मिला था जिस ने उसके खेल को पकड़ लिया था। लोग गुरू जी कि बात समझ गये थे और खिल–खिला कर हंस रहे थे। साधु ने आव देखा न ताव और वहां से भागने की सोची

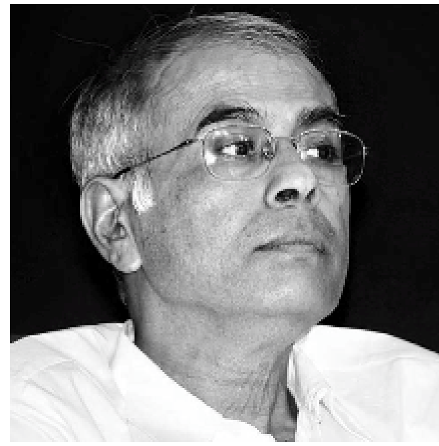

नरेन्द्र दाभोलकर

इस बात को तो 500 साल से भी अधिक हो गये हैं पर हमारे देश में अन्धविश्वास और पाखण्ड बढ़े ही हैं, घटे नहीं हैं और इस की लपेट में अनपढ़ ही नहीं पढ़ा लिखा तवका उस से भी अधिक हैं जैसे की यह हाल में ही अखवार में छपी घटना ब्यान करती है।

कर्नाटक प्रान्त के शहर माइसुरू की एक अदालत का बड़ा कमरा जहां बैठ कर न्यायधीश फैसले करते थे पिछले 9 महीने से बन्द है और उस में ताले लगे है। कारण जो न्यायधीश महोदय 9 महीने पहले वहीं के मुख्य जज थे उनकी एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई, और तब से उसे भूतों का कमरा घो**षित किया गया है।** आगे की बात और भी मजेदार है। पण्डित लोग कहते है कि हवन किया जायेगा ताकी भूतों का प्रकोप खत्म हो जाये।

स्वामी दयाननद की मृत्यु के बाद आर्य समाज जैसी संस्थाऐं इस के लिये आगे आई थी पर वे स्वयं कर्मकाण्डों और अन्धविश्वासों का गढ़ बन चुकी है। उनका मुख्य काम बन गया है संस्कृत व हिन्दी प्रचार, बड़े बड़े व्यवसाईक हवन, योगा और दर्शन का प्रचार। खैर नरेन्द्र दाभोलकर की **Maharashtra Andhashraddha Nirmoolan** Samiti आज महारा**ष्टर में** वही काम कर रही है जो किसी समय आर्य समाज करता था। और आज इस समिती का प्रदेश में बहुत प्रभाव हो गया है। मैं श्री नरेन्द्र दाभोलकर को योद्धा सन्यासी स्वामी दयानंद के बहुत नजदीक मानता हूं।

खिलाड़ी भी ध्यान के महत्व को समझ रहे हैं

प्रसिद्ध गोलफ खिलाड़ी अनिरवन लहरी का मानना है कि 'ध्यान' द्वारा उनके खेल में बहुत ही अधिक सुधार हुआ है। वह रोज 90 मिन्ट ध्यान करते हैं। उनका मानना है कि ध्यान से न मैं केवल अच्छा खिलाड़ी बना हूं पर इस के द्वारा मुझे अच्छा इंसान बनने में बहुत सहायता मिली है।

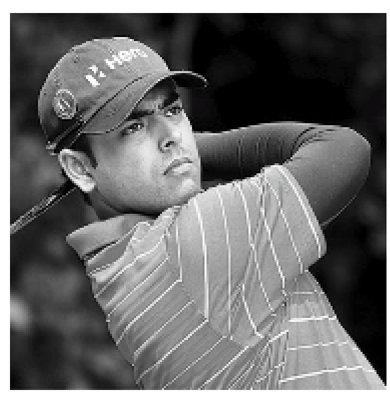

अनिरवन लहरी

उनके अनुसार ध्यान कि क्रिया ने मेरे मन को स्थिर किया है। न तो मैं सफलता में बहुत अधिक प्रसन्न होता हूं और न ही असफलता मुझे निराश करती है।

कैनवरा में एक आर्यसमाजी सज्जन हर सम्ताह घर में ही सत्संग करते है। जो कि वहां के हिन्दुस्तानियों में बहुत मशहूर हो गया है कारण वे पहले आधा घंटा ध्यान करते हैं। अब 50––60 लोग उनके सत्संग में हर सप्ताह आते है।

भगवान राम ने अपने गुरूवर वसि**ष्ठ** से पूछा––––––''गुरूवर ! शरीर को ठीक रखने के लिये तो प्रतिदिन हम अच्छे से अच्छा पोष्टक भोजन देते हैं, आत्मा को क्या खिलाये?

गुरूवर वसि**ष्ठ बो**ले––––'' हे राम आत्मा का भोजन ईश्वर का ध्यान है। जब तक मनुष्य ध्यान नहीं करता आत्मा तृप्त नहीं होती।''

महर्**षि दयानन्द** सरस्वती भी बहुत सुबह पहले ध्यान ही करते थे जिसे ब्रहम यज्ञ का नाम दिया है।

केवल मात्र जानने से कुछ नहीं होता आवश्यक है उसे अमल में लाने की

महात्मा आनन्द स्वामी

एक मकान में एक पति–पत्नी रहते थे। नीचे की मज़िल में उन्होने अपना सामान रखा हुआ था, जिन में कीमती वस्तुऐं भी थी। उपर की मंजिल में उनका सोने का कमरा था।

एक दिन रात के समय चोर घर में घुस आये। पत्नी ने आहट सुनी तो पति से बोली––'' मालुम होता है, चोर नीचे का दरवाजा खोलने का यत्न कर रहा है।

पति ने कुछ सोचा फिर पत्नी से बोला––'' हां जानता हूं''

पत्नी ने फिर आवाज सुनी तो पति से बोली––'' मालुम होता है, चोर ने दरवाजा खोल लिया है।''

पति ने फिर वही जवाब दिया––'' हां जानता हूं''

पत्नी उठ कर बैठ गई और पति से बोली––'' आवाज से मालुम होता है कि वह अब बड़े सन्दूक को खोलने का यत्न कर रहा है।''

पति ने फिर वही जवाब दिया––'' हां जानता हूं''

पत्नी हैरान परेशान फिर पति से बोली, सुनते हो––उसने सन्दूक खोल लिया है। अब वह चीजें निकाल रहा है। चांदी के बरतनों की खड़खड़ाहट साफ सुनाई दे रही हैं।

पति ने फिर वही जवाब दिया––'' हां जानता हूं''

हैरान परेशान पत्नी फिर पति से बोली–– आवाज से मालुम होता है कि वह अब गठरी उठाकर दरवाजे की और जा रहा है।

पति ने फिर वही जवाब दिया––'' हां जानता हूं''

पत्नी बोली–– अब वह दरवाजे से निकलकर भाग रहा है।

पति ने फिर वही जवाब दिया––'' हां जानता हूं''

पत्नी ने क्रोद्ध में आ कर कहा––'' भाड़ में जाये तुम्हारा जानना।

पत्नी का क्रोद्ध ठीक है। इस जानने का क्या लाभ। घर लुट गया और घर का मालिक यही कहता रह गया––' मैं जानता हूं। मैं जानता हूं।

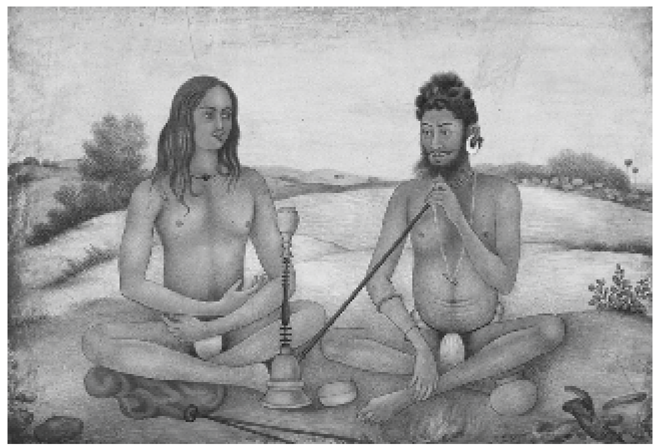

तो मेरे भाई ! केवल जानना बेकार है। सौ मन जानने से एक रती आचरण करना कहीं अच्छा और कीमती है। केवल ज्ञान की बातें करते रहने से कुछ नहीं होगा। खीर अच्छा स्वादिष्ट पकवान है पर केवल खीर–खीर कहते रहने से या उसके गुण गाने से काम नहीं चलता। खीर तो तभी उपलब्ध होगी जब उसको बनाने के लिये कर्म करोगे।

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

PERSEVERANCE

Prof. S P Puri

Perseverance is a great element of success. If you knock long enough and loud enough at the gate, you are sure to wake up somebody.—Henry Wadsworth Longfellow

Arise, awake and stop not till the goal is achieved. — Vivekananda

The nerve that never relaxes, the eye that never blanches, the thought that never wanders, these are the masters of destiny.—Edmund Burke

Perseverance: secret of all triumphs. — Victor Hugo

Perseverance is a trait that points to a lasting form of unfailing effort that patiently and wholeheartedly persists until a goal has been reached. A reporter asked Thomas A. Edison, "Are your discoveries often brilliant intuitions?." "I never did anything worth doing by accident," was his reply, "nor do any of my inventions come indirectly through accident, except the phonograph. No, when I have fully decided that a result is worth getting, I go ahead on it and make trial after trial until it comes. I have always kept strictly within the lines of commercially useful inventions. I don't know any other reason. Anything I have begun is always on my mind, and I am not easy while away from it until it is finished." He failed four thousand times while in search of a material for the filament of an electric lamp. His capacity to persist with the job in hand was indeed marvelous.

We all know of the story of a spider that made it to the top after several failed attempts. But many may not be aware of the story of the same nature of a human being. If you meet successive failures in life, don't get disheartened, take inspiration from this story and keep trying till you succeed.

At the age of 21, he fought a local election and was defeated. At 22, he entered into wedlock that did not work. At 24, he tried his hand in business but failed. At 27, his marriage ended in divorce. At 32, he fought an election for the Lower House of the U S Congress, but met defeat. At 37, he tried his luck in the Senate election, but again faced defeat. At 42, he re-entered the election fray for the Lower house, but was humbled once more. At 47, he lost the election for the post of Vice-President. But the same man, at the age of 51, became the US President. His name is Abraham Lincoln and is ranked among the greatest of Presidents.

Newton discovered the law of gravitation before

k4348714 www.fotosearch.com

he was twenty one. A slight error in measurement of the circumference of earth interfered with his demonstration of his theory. Twenty years after he corrected the error and demonstrated that planets move in their orbits by the same law of gravitation.

It took twenty years for Gibbon to write his, "Decline and Fall of Roman Empire." Webster worked on his dictionary for twenty-six years. Newton rewrote his," Chronology of Ancient Nations" fifteen times. Tolstoy wrote and rewrote his masterpiece, "Anna Karenina" seventeen times.

Unfavorable circumstances impart strength to our personality. He who wrestles with us gives strength to our shoulders and our antagonist is our helper, thus said Burke.

Dismayed by repeated failures, a Chinese student threw away his book in despair, but, when he saw a poor woman rubbing an iron bar on a stone in an effort to make a needle. he was fired with renewed enthusiasm. He became one of the three great scholars of China.

Michelangelo, the great Italian sculptor would reach his studio before sunrise and would work till sunset. He said that, "Art is a jealous goddess and wants the whole man." His creation of the statue of David out of a discarded marble block, is a story of great perseverance. He was eighty years old at that time.

Einstein once commented that his success was due to the fact that he stayed longer with the problem. Talent is indeed desirable, but perseverance is more so.

"Never despair," says Burke," but if you do, work on in despair."

क्या कारण है हमारे मानसिक तनाव का

नीला सूद

एक बहुत विद्वान महात्मा एक शहर में पधारे तो वहां के लोग अपने मन की शंकाओं के समाधान के लिये उनके पास पहुंचने लगे।

एक व्यक्ति ने महात्मा से प्रश्न किया कि आज जब कि हमारे पास जीवन को सुखमय ढंग से जीने के लिये पहले से कहीं अधिक साधन है फिर भी हमारे मन में तनाव पहले से अधिक क्यों है? यही नहीं यह तनाव हमारे को मानसिक और श्शारिरिक तौर पर रूगण बना कर जीवन को नीरस करता जा रहा है।

महात्मा मुस्करा दिये फिर थोड़ी देर बाद जो उन्होने कहा वह इस प्रकार है------''मुझे विश्वास है कि आपने मयुज़िकल कुर्सीयों का खेल कभी न कभी खेला होगा ओर अगर खेला नही ंतो देखा अवश्य होगा। अक्सर क्या होता है कि खेल के श्शुरू में कुर्सियां लगभग उतनी ही होती हैं जितने की खिलाड़ी, इसलिये संगीत के चलते हुये न तो कोई खाली कुर्सियों पर अधिक नजर रखता है और न ही संगीत के रूकने पर खिलाड़ियों को अधिक भागदौड़ करनी पड़ती है। आराम से ही सब को कुर्सी मिल जाती है। पर जैसे जैसे खेल बढ़ता है और कुर्सियों की संख्या कम की जाती है, भाग लेने वाले खाली कुर्सियों की तरफ पैनी नजर रखते हुये देखे जाते हैं और संगीत रूकते ही भाग कर खाली कुर्सी पर बैठने की कोशिश करते है। जब खेल का अन्तिम भाग आता है तो स्थिती यह पहुंच जाती है कि लोग खाली कुर्सी पर बैठने के लिये एक दूसरे को धक्का तक दे देते हैं।''

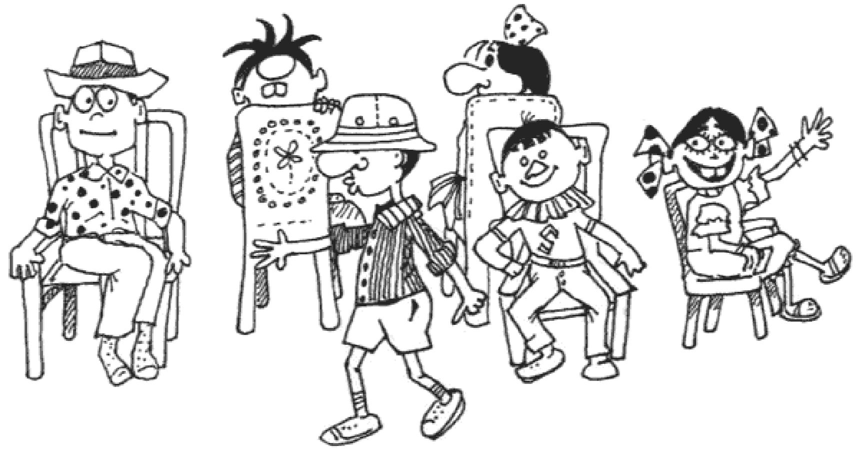

''ऐसा ही कुछ हमारे सभी के जीवन मे हो रहा है। इस भौतिक उन्नती ने लोगों की भौतिक इच्छाओं को भी बढ़ा दिया है और व्यवसाइक विज्ञापन आग में घी का काम कर रहें हैं। लोग अधिक से अधिक, थोड़े समय में ही प्राप्त करना चाहते हैं। पहले थोड़ों के पास ही अपमा मकान होता था। आज हाल यह है कि एक मकान होने के बाद भी आदमी दूसरे तीसरे फलैट को पाने का संघर्ष कर रहा है। ऐसे में थोड़े साधनों के लिये अधिक से अधिक लोग पंक्ति में हैं। इस तरह जीवन मयुज़िकल कुर्सीयों के खेल की तरह ही बन गया। जैसे ही कुसीर्यां कम हो रही हैं भाग दौड़ बढ़ रही है और यही आप जैसे लोगों के मानसिक तनाव का मुख्य कारण बन रहा है।''

यह सुनने के बाद ऐक श्रोता ने पूछा---'' महात्मा, इस मानसिक तनाव को कम करने का क्या उपाय हो सकता है?'' महात्मा बोले------'' जिन के पास साधन पहले से हैं या जिन्होने प्राप्त कर लिया है उनको उस दौड़ में श्शामिल नहीं होना चाहिये। यदि आपके पास घर है तो आप दूसरे घर के लिये क्यों ईच्छा करें खास कर यह जानते हुये कि करोंड़ो ऐसे हैं जिन के सिर पर छत भी नहीं। ऐसी ईच्छाऐं जो कि सिर्फ झूठी श्शानशोकत को पूरा करने के लिये, स्वार्थ से वशीभूत की जाती है वही मानसिक तनाव का मुख्य कारण है। इसलिये मानसिक तनाव को कम करने के लिये यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक संग्रह करने का लोभ हम त्यागें। जब हम ऐसी बहुमूल्य वस्तुओं को अपने पास संग्रह करना प्रारम्भ कर देते हैं जिनका उपयोग कुछ भी नहीं होता तो वे हमारी परेशानी को ही बढ़ाती हैं जो कि मानसिक तनाव का मुख्य कारण है। **ऋषि पतंजली ने** जो मोक्ष के लिये अपरिग्रह की बात की है वह इसी को उजागर करती है अर्थात भौतिक वस्तुओं के संग्रह से दूर रहें।

महात्मा की कही बात जब हम बुढ़ापे में पर्दापण कर जातें हैं तो बिल्कुल ठीक लगती है। जो हमने संग्रह किये होते हैं वे सुख देने के स्थान पर परेशानी का कारण बन जाते है।

प्रेम - प्रगति का मार्ग है

अशोक कुमार

स्पर्श नहीं है अर्थ प्रेम का, प्रेम तो है, जीवन को जो जीवन दे, असुरों-पीड़ाओं को, मानवता से दूर करे, मतभेदों को करे अभेद, हो न कोई भय का छेद, आशाओं के दीप जले, आतंक को विश्राम मिले, फिक्र मिले न राम रहीम को, खुशहाली के सुमन खिले। दूसरों की सहे जो पीड़ा -प्रेम है, बिरहा में सुलगे साथ-प्रेम है, तपे रेत समान, वियोग में - प्रेम है, कंधा दे, कंधा न मांगे - प्रेम है, प्रेरणा बने, बढ़ाऐ होंसला - प्रेम है। मनुष्य मूर्ति स्थापना, होती नहीं प्रेम की अराधना, सोचे जो मानव की केवल, मंथन करे कर्म का केवल, उठाये धरातल से गिरे हुओं को, वही प्रेम का असल रूप है। सरहदों का जिक्र करे न, एकता ही संजीवनी बने, वही प्रेम का असल रूप है। प्रेम न प्रचण्ड करे, ऐसा कोई प्रबंध करे जिससे संबंध बढ़े। ऐसा प्रेम खेल रचे चिमनियों से धुआँ उठे, चंद्रयान रोज उड़े, कन्याकुमारी पास लगे, कश्मीर में न सेब झड़ें, चीन-पाक दूर लगें, तितलियां,निशा में घर मुड़े, प्रभात फिर नया लगे, ऐसा प्रेम प्रगति बनें।

प्रेम शब्द बड़ा ही मधुर है, इसका न कोई आकार है, न रंग, बस एक भाव है। पवित्रता, सत्यता जगाने वाला, इसके साथ श्रद्धा का भाव जुड़ जाता है, न अनिवार्यता होती है, न भय न बल, बस एक भक्तिभाव, अपनापन, स्वार्थ, घमण्ड से पूर्ण मुक्त। कबीर, रविदास, बुद्ध का प्रेम प्रभु भक्ति, त्याग, संतोष्ठा । ऐसा प्रेम केवल कृतार्थी का गुण है जो लोभ रहित होता है। कुछ लोग पशु-पक्षियों, वृक्षों-पहाड़ों से प्रेम करते हैं। प्रेम जात-पात, ऊँच-नीच, छुआ-छूत से स्वतंत्र होता है। प्रेम की दृष्टि में सब समान होते हैं। कबीर ने कहा कि प्रेम पथ अति कठिन है, ज्यों खाण्डे की धार, जो होले से गिर पड़े, ठहरे उतरे पार।

प्रेम एक ऐसा प्रलेप है जिससे प्रेम करने वाले और प्रेम पाने वाला दोनों ही शांतिभाव का एहसास करते हैं, एक आनन्द मानते हैं। किसी के दुख-पीड़ा को बांटते है, सहायता करते हैं, वही प्रेम है। सच्चा प्रेम-धन, स्वार्थ, वैभव के लिए नहीं होता, अपनी आत्मा को परमात्मा के लिए जोड़ने हेतु होता है, इसके पीछे अगर संग्रह प्रवृति है तो वह प्रेम नहीं छल-कपट है, समर्थय, शक्ति, प्रगति, स्मृद्धि चाहिए तो प्रेम पथ अनुसरण करना होगा क्योंकि उसमें मधुरता, विकास, बुद्धि का मिश्रण होता है ''संत तिरुवल्लुवर ने कहा कि, नेकी से वेमुख हो जाना और बदी करना, निःसंदेह बुरा है अर्थात यह प्रेम के विपरीत है।'' प्रेम में ईषर्या नहीं, न ही संबंध भंग मर्यादा, करूणा में लालच और स्वार्थ नहीं

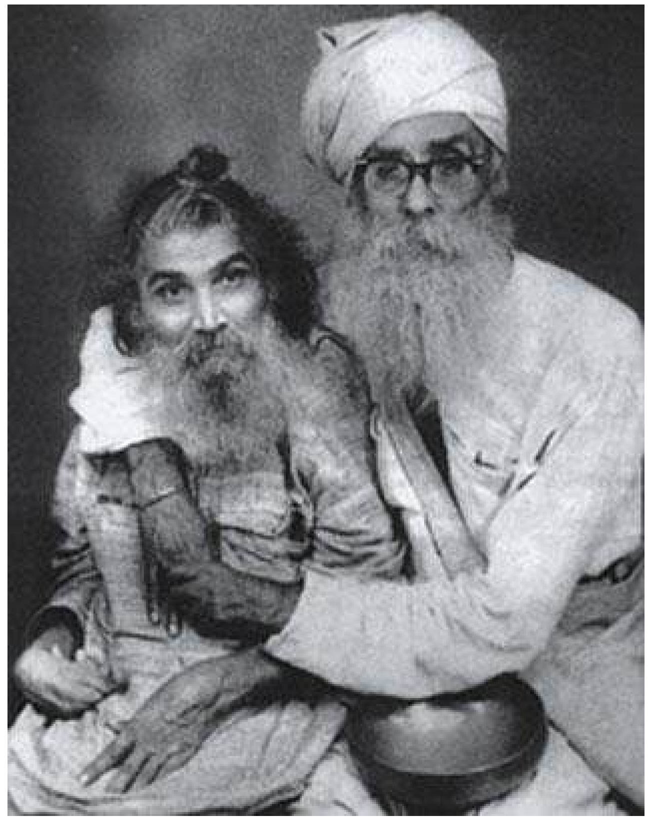

भक्त पूर्ण सिंह – कोडही व लाचार जिन्हे कोई देखता तक नहीं था। उन्हे न केवल गले लगाया, पर उनका ईलाज किया – यही है मानव प्रेम

होता, ऐसा प्रेम समाज को सम्पन्न और उन्नत करता है। आने वाले कल का क्या भरोसा, प्रेम सदा जीवित रहता है। ''प्रभु यशु ने कहा कि हर मनुष्य से प्रेम करो, मैं आपका ध्यान रखूँगा, दूसरों के दुख में साथ दो, मैं आपका साथ दूंगा।'' इससे प्रगति होगी, जब सब मिल बांटकर खायेंगे, सहन करेंगे, उससे समाज में आराजकता, आतंक नहीं बढ़ेगा। सबके भले की कामना करना, दूसरों के उद्धार का सोचना, संसार में ऐसे रचनात्मक, निमार्णकारी कार्य करना भी प्रेम है और उनमें प्रशंसा ही कोई विनाशकारी पथ विकसित न हो, ईमानदारी हो, निंदनियता न हो, ज्ञान प्रसार केन्द्रों को खोलना, चिकित्सालय, विद्या भवन, विकलांग-अपंग, निर्धनों, भूखों को खाने, अंधों को आंखे दिलवाना प्रेम है। आज भारत में देवालय नहीं शोचालय चाहिए जिससे प्रदूषण न बढ़े। समाज में बढ़ रहा उत्पीड़न, शोषण, कुरीतियां, बुराईयों, कर्म-काण्ड के

विरूद्ध आवाज उठाना, मानवता प्रेम है। हिंसा, अपराध, आतंक, पाप, धर्म अपराध करना अनौचित्य के विरूद्ध है। मानवता के प्रति प्रेम को अंकुरित करने के लिए आलस्य, हरामखोरी, अनिमियता, अनीतियों, अनैतिकता विरूद्ध आवाज उठानी भी समाज प्रेम है जिससे स्थिरता, शांति का प्रसार होगा। आपदा, त्रासदी में सहायता और सहानुभूति प्रेम है, क्योंकि इससे घायलों, बेघरों, लापता हुए लोगों को आसरा मिलता है। राम द्वारा सबरी के भेंट किए फल खा कर, गुरू नानक द्वारा निर्धन का भोजन खाकर अपने प्रेम को ही प्रदर्शित नहीं किया बल्कि समाज में समानता का संदेश दिया जिससे समाज संगठित हो, ऊँच-नीच समाप्त हो और मानवता से प्रेम किया और समाज को उपदेश दिया कि शुभ कर्म करो, प्रभु सिमरन करो एवं जो मिले उसे मिल बांटकर खाओ। यह त्रिवेणी उपदेश प्रगति के लिए स्तंभ था और है। एकत्रित संपति मनुष्य के साथ नहीं जाती। सम्राट अशोक और शेरशाह सूरी ने समाज कल्याण के कार्य कर समाज प्रेम का प्रमाण दिया।

मोह, अहंकार, लोभ ये सबसे बड़े दानव है, त्याग अगर इनका हो जाये तो समाज शांति स्वयं स्थापित हो जायेगी और उन्नति होगी। ये दानव समाज में स्वार्थ, विनाश के लावे का निर्माण करते हैं, इनसे रोग, भोग, तनाव, पाप आर असंयम बढ़ता है। समाज में धर्मी, पूण्यकर्मी लोग भोजन शिविर लगाते हैं, धर्मशालाऐं, कुऐं बनवाते हैं, सामूहिक विवाह, दंगा, बाढ़ पिड़ितों सहायता आदि करते हैं, अध्यात्मिकता, प्रेम, रहम अधीन वह प्रेम है, जिससे भला होता है और प्रगति का अवाहन होता है। सब धर्मों का सत्कार करना भी प्रेम है। कोई भी धर्म नफरत नहीं सिखाता, धर्म आस्था समन्नय, सुसम्य और सुसंस्कृतिक का मिश्रण होता है, दया, करूणा सभी के प्रति प्रेम है, बैर, विरोध नहीं होगा तो मानवता विकास सुनिश्चित और धार्मिक टकराव नहीं होगा और सुखद जीवन होगा। धर्म निरपेक्षता नीति विकास करती है, धर्म पर आधारित घर वापिसी विष रोपण करती है केवल जीयो और जीने दो का उपदेश समाज में संजीवन होता है।

दूसरों का भला करना, पारस्पारिक विरोध घटाना, प्रेम भाव बढ़ाना, दीन-दुखी दुर्बल की सहायता, निस्वार्थ भाव से सहयोग प्रेम लक्षण हैं। इससे मनोबल बढ़ता है, समाज सेवा है, कष्ट - वेदना अत्याचार, अनाचार रूकते हैं। विवेकानंद, अरविंद, राजा राम मोहन राय ने समाज में कुरीतियों, कुप्रर्थाओं का विरोध किया, रोष किया, अवरोध बनें समाज को जोश दिया और मानवता के मीत बने। समाज में तंत्र, मंत्र, माला मूर्ति, पूजा वर्त को व्यर्थ कहा। ये समाज प्रेम था और उत्थान का भाग था। मदर टेरेसा और प्रकाश सत्यार्थी का आवहन भी समाज प्रति प्रेम था जिससे अनाथों और बाल वर्ग को जीवन मिला। पहले कुछ धनवान व्यक्ति आगे आते, फिर छोटे छोटे संगठन कई नामों से विकसित हो जाते जिससे सामुहिक सहयोग, सहकारिता बड़ी और प्रगति हुई। इतिहास में कुछ ऐसे महापुरुषों - मसीहों का वर्णन मिलता है जिन्होंने अपनी सोच, सिद्धोंतों, विचारधाराओं से व्यवस्था बदल दी जैसै महात्मा गांधी, डॉ भीमराव अंबेडकर, सुभाषचन्द्र बोस, संत कबीर, रविदास, नानक जिन्होंने अज्ञानता का अंधकार दूर किया और मानवता प्रेम का संदेश दिया। कुछ साहित्यकार, कवियों ने भी अपनी लेखनी से समाज सेवा की और प्रगति पग प्रदर्शन किया। सफल व्यक्ति सदा दूसरों से प्रेम करते हैं, प्रेम एक सेतु बनता है जिससे ऊँचाईयों को वे छू लेते हैं, कठिन काम आसान हो जाता है, दूसरों को अपना बना लेते हैं, अजनबी परिचित हो जाते है, संबंध मजबूत हो जाते हैं, जीने का मकसद बन जाता है। लक्ष्मण रेखाऐं मिट जाती हैं। सुनहरी अवसर बन जाते हैं, रहस्य खुल जाते हैं, क्रोध पिघल जाता है और महाभारत नहीं बनते। प्रेम के वृक्ष पर शांति और विकास के फल लगते हैं। प्रेम निशुल्क होता है और प्रगति का आगमन होता है। **फोन न. 9878922336**

क्या आप जानते है कि शहरों की भीड़भाड़ वाला यातायात (Traffic) आपकी आयु को कम करता है

यह खुलासा किया है न्यूयार्क शहर के भूतपूर्व मेयर माईकल बलूमवर्ग ने। उनके अनुसार यह समस्या भारत के सभी बड़े शहरों की हैं। जितना अधिक समय आप ट्रैफिक जाम में काटते है उतना ही अधिक नुकसान खराब वायु के कारण आप के फेफड़ों के उपर पड़ता है। यही नहीं ट्रैफिक जाम के दौरान जो आप को वेचैनी होती है वह आप के मानसिक तनाव को बढ़ाकर आप को अलग से नुकसान करती है।

इससे बचने का सुगम उपाय यह है कि जहो सम्भव है, peak hours में जब ट्रैफिक अधिक होता है यात्रा न कर ऐसे समय यात्रा करें जब ट्रैफिक कम होता है। प्रशासन इस और ध्यान दे तो लोगों का जीवन खुशहाल बन सकता है और आयु बढ़ सकती है।

The bliss of God-realization is the goal of all creation.

Every one of us desires to be happy. Yet, most people are un-happy, immersed in some kind of suffering. If at times they do get small installments of happiness in their lives, it is neither unadulterated nor permanent or abiding.

Most seek happiness through the fulfillment of their multifarious desires but while doing this they prepare platform for sufferings also since fulfillment of desire is never an assured thing. Hence, in the pursuit of desires, one should remain prepared for the suffering too which result from from the non-fulfillment of other desires which have direct link with the desires which get fulfilled. For example I know of a student who was very happy when he was told that he had topped in the city with 99.2 percentile, but when I met to congratulate him in the evening, his mother told that he was shattered as the percentile he got could not guarantee him admission in his cherished Institution.

Man is subject to sudden moods and impulses. Sometimes he is happy and elated, at other times he is very unhappy and downhearted. The swing in his moods largely depends on to the extent his desires are fulfilled. He is happy when desire is fulfilled but devastated and frustrated when not fulfilled. True, fulfillment of some desires yields momentary happiness, but this happiness does not last, and it soon leads to reaction in the form of depression. Thus moods are continually changing.

Complete detachment with the fruits of our actions is one of the essential conditions of lasting and true happiness, for he who has complete detachment no longer creates for himself the suffering which generally is due to the unending thralldom produced by the non-fulfillment of desires. Detachment with the fruit of one's actions brings in the man a complete peace of mind. He is neither moved by pleasure of success nor by the sorrow of failure. He is not upset by the onslaught of opposites. The steadiness and equanimity which remain unaffected by any opposites is possible only through complete detachment, which is an essential condition of lasting and true happiness. This state is latent in everyone, and when, through complete detachment, one reaches the state of wanting nothing, one taps the unfailing inner source of eternal and unfading happiness which is not based upon the objects of the world, but is sustained by Self-knowledge and Self-realization.

Still mere detachment, however, cannot yield eternal bliss. Eternal bliss begins when a man learns to see self in others that involves rising above self to help others, love, compassion and karuna. From here one realizes the spiritual importance of transforming a life of the limited self into a life of love.

When true love is awakened in a man it leads him to God-realization, opening up an unlimited field of lasting and unfading happiness. The happiness of God-realization is the goal of all creation. It is not possible for a person to have the slightest idea of that inexpressible happiness without actually having the experience of Godhood. Real happiness which comes through realizing God is worth all the physical and mental suffering in the universe. Then all suffering is as if it had never been.

Even those who are not God-realized, can control their minds through yoga to such an extent that nothing makes them feel pain or suffering, even if they are in a distressing situation. However, though yogis can brave and annul any suffering, they might not experience the happiness of realizing God.

When one realizes God, everything else is zero. The happiness of Godrealisation is self-sustained, eternally fresh and unfading, boundless and indescribable. This realization is the purpose of human life.

कार्टूनों व चुटकुलों में समाई होती है हमारे समाज व चरित्र के खोखलेपन की सच्चाई

सीता राम गुप्ता

सात जनवरी सन् 2015 को पेरिस की चर्चित व विवादास्पद कार्टून पत्रिका शार्ली हेब्दो के कार्यालय पर आतंकवादियों, उग्रवादियों अथवा अलगाववादियों द्वारा किया गया हमला और कार्टूनिस्टों की मौत बेहद अफ़सोसनाक है। कुछ लोग इसे अभिव्यक्ति की आज़ादी पर हमला बता रहे हैं तो कुछ इसके लिए पत्रिका, संपादक व कार्टूनिस्टों को **दोषी** ठहरा रहे हैं। कुछ लागों का कहना है कि उन्हें मुहम्मद साहब (सलि0) का विवादास्पद कार्टून नहीं छापना चाहिए था। इस पर अलग से चर्चा अपेक्षित है लेकिन क्या आतंकवादियों द्वारा इस प्रकार का क़त्ले-आम जायज़ है?

क़त्ले-आम आतंकवादियों का धर्म है। यदि आप पेरिस हत्याकाण्ड को जायज़ ठहराते हैं तो फिर पेशावर में हुई मासूम बच्चों की हत्या को भी नाजायज़ नहीं मानते होंगे? मलाला यूसुफ़जई पर हुए क़ातिलाना हमले को भी एक मामूली घटना मान रहे होंगे? प्रश्न ये भी उठता है कि इस प्रकार के हमलों व बदला लेने का हक़ उनको दिया किसने है? वास्तव में आतंकवादियों, उग्रवादियों अथवा अलगाववादियों द्वारा उठाए गए क़दमों का कोई औचित्य नहीं होता। उनका एक मात्र उद्देश्य हिंसा व केवल हिंसा होता है जिसके द्वारा वो अपने अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास करते रहते हैं।

अब एक और महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठता है और वो ये कि आख़िरकार कार्टून व कैरिकेचर बनाए ही क्यों जाते हैं? कार्टून या वंग्यचित्र अथवा केरीकेचर या विद्रूपचित्र पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण विद्याा है। हर समाचार पत्र-पत्रिका का यह अनिवार्य अंग है। यह हास्य-व्यंग्य का ही एक कलात्मक रूप है। जब हम किसी बात को सामान्य तरीक़े से कहने में असमर्थ पाते हैं तो विशेष तरीक़ों का इस्तेमाल करते हैं। कई बार सामान्य तरीक़े से कही गई कोई बात उतना प्रभाव नहीं छोड़ती जितना प्रतीकात्मक रूप से अथवा हास्य-व्यंग्य के माध्यम से कही गई बात छोड़ती है। यहाँ व्यंजना की शक्ति अपने प्रखरतम रूप में होती है।

आज के दौर में चुटकुले सबको भाते हैं। कई चुटकुले हलके-फुलके तरीक़े से हँसाने-गुदगुदाने का काम करते हैं तो कई व्यक्ति, समाज और व्यवस्था के सतहीपन पर गहरा आघात भी करते हैं। हर चुटकुला किसी न किसी व्यक्ति, समाज अथवा राश्ट्र के चरित्र को बेनक़ाब करने पर आमादा

होता है बशर्ते कि हम उसको समझने की योग्यता रखते हों। आम आदमी आज जिस भ्रष्टाचार से त्रस्त और बदहाल है, जिसे मिटाने के लिए लोग बार-बार सड़कों पर उतर रहे हैं। क्या उस भ्रष्टाचार के ग्रंथ की भूमिका नहीं हैं ये चुटकुले?

कुछ चुटकुले देखिए।

पत्नी ने पति से पूछा, ''क्या आपको यही चोर नौकर मिला था घर पर काम करने के लिए?'' ''क्यों क्या हुआ?''पति ने निर्विकृत होकर पूछा। पत्नी ने जवाब दिया, ''परसों नेताजी के यहाँ हुई पार्टी में से हम जो चाँदी के चम्मच चुराकर लाए थे, वो सब के सब आज इसने ग़ायब कर दिए हैं। ऐसे चोर को मैं एक दिन भी घर में बर्दाशत नहीं कर सकती।'' क्या यह चुटकुला हमारे चरित्र की वास्तविकता को प्रकट नहीं करता? यह हमारी दोहरी मानसिकता को स्पष्ट करता है। हम स्वयं चाहे कितने ही अनैतिक क्यों न हों लेकिन दूसरों की अनैतिकता कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे।

पिछले दिनों एक समाचार पढ़ा। स्विट्ज़रलैंड में एक इलाक़ें में एक फायर स्टेशन था। उस पूरे क्षेत्र में आग लगने की घटनाएँ लगभग समाप्त हो गईं तो प्रशासन ने उस फायर स्टेशन को बंद करने का फैसला कर लिया। फायर स्टेशन के कर्मचारियों को इस बाबत नोटिस थमा दिया गया। अभी न तो फायर स्टेशन बंद किया गया था और न ही कर्मचारियों को निकाला गया था कि अचानक उस क्षेत्र में आग लगने की घटनाओं में बेतताजा तेज़ी आ गई। रोज़ किसी न किसी इलाक़े में आग लगने लगी। बाद में प्रशासन ने इसकी खोजबीन की तो पता चला कि अपनी नौकरी बचाने के उद्देश्य से फायर स्टेशन के कर्मचारी ही विभिन्न स्थानों पर ये आग लगा देते थे।

आज सबसे ज़्यादा संदिग्ध भूमिका धर्म की ही है। धर्म की जो भूमिका होनी चाहिए उससे उलट हो रहा है। फिर धर्म का मज़ाक क्यों न उड़ाया जाए? धर्म के नाम पर भोले–भाले लोगों का शोषण हो रहा है। धर्म सामाजिक व्यवस्था न रह कर आर्थिक शोशण करने व धर्मांधता फैलाने की प्रक्रिया मात्र बन कर रह गई है। सदियों से जिधर देखों अपने धर्म के मानने वालों की संख्या बढ़ाने का काम युद्धस्तर पर चल रहा है। घरवापसी और शुद्धिकरण का काम जोरों पर है। धर्म के नाम पर उग्रवाद पनप रहा है। क्या यह सामान्य स्थिति है? बिलकुल नहीं। लेखकों, कवियों, चिंतकों व कलाकारों ने हमेशा धर्म के खोखलेपन का मज़ाक उड़ाया है। उर्दू शायरी तो धर्म के प्रतीकों के मज़ाक से भरी पड़ी है। मीडिया के दूसरे स्रोतों द्वारा भी यह सब करना स्वाभाविक नहीं।

लोगों का उपचार करने के लिए डॉक्टर बनें, दवाओं का आविष्कार हो ये बात तो ठीक है लेकिन यदि इसका उलट होने लगे तो? आज दवाओं को खपाने के लिए बीमारियाँ ईजाद की जा रही हैं। लोग चिकित्सा जगत की प्रयोगशाला बनकर रह गए हैं। चिकित्सा एक उद्योग बन गया है जबकि व्यक्ति मात्र एक उपभोक्ता। एक सामान्य व्यक्ति ही नहीं रोगी भी बाज़ारवाद के चंगुल में फंस कर छटपटाने को विवश है। रोग और उपचार का संतुलन अनिवार्य है अन्यथा डॉक्टरों की संख्या ओर दवाओं की मात्रा ही नहीं रोग और रोगी भी बढते रहेंगे।

एक तरफ हम पर्यावरण बचाओ, पर्यावरण बचाओ चिल्ला रहे हैं तो दूसरी ओर विकास के नाम पर उसी पर्यावरण की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। पहले तो दीपावली आदि त्यौहारों पर ही पटाखों का प्रदूशण फैलता था लेकिन आजकल तो दिन को होली रात दिवाली की तर्ज़ पर रोज़ ही पटाखे बजने लगे हैं। वो कोई बारात हो या वारदात पटाखों के बिना रंग जमता ही नहीं। वैसे कुछ लोग पटाखे न जलाएँ, प्रदूशण न फैलाएँ तो इस विशय पर वाद–विवाद कैसे हो? और वाद–विवाद न हो तो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कैसे हो?

क्रिकेट और पटाखों का तो चोली–दामन का साथ हो गया है। भारत जीते तो पटाखे बजाना बनता है लेकिन पाकिस्तान हारे तो भी पटाखे बजाने का औचित्य अपनी अल्पबुद्धि से परे है। हाँ भारत की जीत पर ही नहीं कुछ लोग पड़ौसी मुल्क की जीत पर भी सेलिब्रेट करने से नहीं चूकते जो उनकी फ़राख़दिली का ही सबूत है। कोई जीते कोई हारे, बहरहाल पटाखों की शामत तो आ ही जाती है। साथ ही हमारे चरित्र की वास्तविकता उजागर हो जाती है, इसमें भी संदेह नहीं।

मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की। एक बार एक व्यक्ति की फ़ैक्टरी में आग लग गई। जब उनके पड़ौसी को फ़ैक्टरी में आग लगने का पता चला तो वो अफसोस ज़ाहिर करने के लिए आया और कहा कि बड़े दुख की बात है कि आपकी फ़ैक्टरी में आग लग गई और आपका बहुत नुक़सान हो गया। उसके बाद पड़ौसी ने उनसे पूछा, '' वैसे भाई साहब आपकी फ़ैक्टरी में बनता क्या है?'' फ़ैक्टरी मालिक ने जवाब दिया, ''हमारी फ़ैक्टरी में आग बुझाने के यंत्र बनते हैं।'' हमारा विकास मात्र छलावा और हम पर बोझ बनकर तो नहीं रह गया है, इस पर भी चिंतन करने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

एक जीवंत समाज की पहचान ही इससे होती है कि वह अपने ऊपर हँस सकता है कि नहीं। शायद इसीलिए सभ्य समाज ने चुटकुले बनाए। इनका मक़सद न केवल अपने ऊपर हँसना है अपितु हँसते–हँसते समाज की शिश्ट आलोचना करना भी है। अफ़सोस कि आज हम चुटकुलों को केवल हँसने का माध्यम समझ रहे हैं। हम चुटकुलों के जरिए हँसे, लोगों को उनका असली चेहरा दिखाएँ लेकिन साथ ही इस बात का भी मूल्यांकन करें कि कहीं हम स्वयं भी उसके एक पात्र तो नहीं?

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323 Email : srgupta54@yahoo.co.in

वेद पारायण व बहुकुण्डीय यज्ञों का औचीत्य और प्रासंगिकता

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्य जगत की पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से समय–समय पर ज्ञात होता है कि अमुक–अमुक स्थान पर बहुकुण्डीय यज्ञ हो रहा है व कहीं किसी एक वेद और कहीं चतुर्वेद पारायण यज्ञ हो रहें हैं। यदा–कदा यह सुनने को भी मिलता है कि किसी स्थानपर एक विशाल यज्ञ हो रहा है जिसमें लाखों व करोड़ों आहुतियां दी जायेंगी तथा कई महीनों चलने वाले उस यज्ञ में मनों व टनों शुद्ध गोधृत व विशेष रूप से तैयार की गई हवन सामग्री से हवन किया जायेगा। हम इन यज्ञों को करने वाले याज्ञिक बन्धुओं की भावनाओं को चोट नहीं पहुंचाना चाहतें परन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या यह सब यज्ञ वेदसम्मत, **महर्षि** दयानन्दसम्मत, प्रासंगिक, समयानुकूल व उचित हैं? **यहां यह नहीं भूलना होगा कि यज्ञों में विकारआने के कारण ही महाभारत के बाद मध्यकाल में वैदिक धर्म का पतन हुआ था और बोद्ध धर्म जैसे मत पैदा हुये थे।**

सब से पहले देखने वाली बात यह है कि क्या महाभारत काल व उससे पूर्व इस प्रकार के यज्ञ होते थे अथवा नहीं? आईये, इस पर **निष्पक्ष** विचार करते हैं। महर्षि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थ लिखें है। पूना में दिये उनके 15प्रवचनों का संग्रह भी उपलब्ध है। उनके जीवन चरित्र से भी उनके जीवन की घटनाओं व विचारों का पता चलता है। हमने प्रायः उनके सभी ग्रन्थों को देखा व सजया़ है। वैदिक साहित्य में परिगणित अन्य अनेक ग्रन्थों को भी पढ़ा है जिनमें यज्ञ विशयक ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं। **हमें कहीं ऐसा उल्लेख नहीं मिला कि महाभारतकाल व उसके बाद आर्य समाज की स्थापना तक वेदपारायण यज्ञ भारत में कहीं होते थे। बहुकुण्डीय यज्ञ का प्राचीन विधान भी कहीं देखने, सुनने व पढ़ने को नहीं मिला। गायत्री मन्त्र या अन्य किन्हीं मन्त्रों से सहस्र, सहस्राधिक या लक्ष आहुतियां देने वाले यज्ञों का वर्णन भी नहीं मिला। वेदों के किसी मन्त्र से भी ऐसा आभास नहीं होता। न हीं आर्य समाज के बनने के 100 वर्ष तक के इतिहास में ऐसे यज्ञों के बारे में पढ़ने को मिलता है। अतः प्रतीतहोता है कि इस प्रकार के यज्ञ आधुनिक आर्य याज्ञिकों की अपनी सोच व का परिणाम हैं।** इनसे जो लाभ होते हैं वह तो विचार कर जाने जा सकते हैं परन्तु हानि यह हो रही लगती है कि वेदों का व आर्यसमाज का जन–जन में जो प्रचार महर्षि दयानन्द करना व करवाना चाहते थे, जिसका विधान उन्होंने आर्यसमाज के तीसरे नियम में किया है, उस कार्य के क्रियान्वयन में कुछ न कुछ बाधा उपस्थित हो रही है। **आम व्यकित के लिये आर्यसमाज हवन बन कर रह गया है।**

जिन लोगों को आर्यसमाज का प्रचार जन–जन में करना था वह वृहत यज्ञों की योजनायें बनाने, उनके क्रियान्वयन करने उसमें होने वाले व्यय, धन व साधनों के संग्रह व सम्भावित लाभ में ही अपना पर्याप्त समय व्यतीत करते हैं और जो आर्यसमाज के असली मुदद्दे थे उनके न तो

समय बचता है और न हीं ध्यान रहता है। हमें लगता है कि इस प्रकर के वृहत यज्ञों के कारण भी आर्य नेताओं, विद्वानों, याज्ञिकों व कार्यकत्ताओं का ध्यान वेद प्रचार से हट कर वृहत वेद पारायण आदि यज्ञों में लगा हुआ है। यह भी उल्लेखनीय है कि यज्ञ न करने वाले धर्म प्रचारकों की संख्या घट रही है। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज को पंचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि, यह दो ग्रन्थ कर्मकाण्ड के दिये हैं। पंचमहायज्ञ विधि में दैनिक यज्ञ–अग्निहोत्र की विधि दी गई है। यज्ञ से लाभ व न करने पर होने वाली हानि के विषय में भी उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश व पूना प्रवचन आदि ग्रन्थों में प्रकाश डाला है। दैनिक यज्ञों के अतिरिक्त संस्कार विधि में सोलह संस्कारों सहित विशेष यज्ञों का प्राविधान किया है जिसमें अमावस्या व पूर्णिमा पर किये जानेवाले यज्ञ भी सम्मिलित हैं। यज्ञों पर इतना अधिक लिखने पर भी महर्षि ने कहीं यह संकेत नहीं किया कि यदि कोई विद्वान वा यज्ञप्रेमी वृहत यज्ञ करना चाहे तो वह वेद पारायण यज्ञ करे व करवाये अथवा बहुकुण्डीय यज्ञ आदि करे वकरवाये। **महर्षि दयानन्द का ध्यान इस बात पर केन्द्रित दिखाई देता है कि यज्ञ में स्वच्छता हो, सरलता हो, जटिलता समाप्त हो, किसी भी प्रकार की हिंसा न हो, वातावरण पूर्ण धार्मिक हो, यज्ञ अल्प समय, अल्प साधनों व व्यय कर सम्पन्न हो सकें, निर्धन भी प्रति दिनदोनों समय यज्ञ कर धर्म लाभ प्राप्त कर सकें।**

हमारा अनुमान है कि यज्ञों का प्रावधान घर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों तथा श्रौतसूत्रों में मिलताहैं। उनमें भी आर्य जगत में प्रचलित आजकल किये जाने वाले वृहत् यज्ञों की भांति महायज्ञों के करने–उचयकराने का विधान नहीं है। अतः इस विषय पर सभी आर्य विद्वानों, विचारकों, चिन्तकों एवं याज्ञिकों द्वारा विचार किया जाना आवश्यक है।

कहीं ऐसा न हो आजकल किये जाने वाले इन वेदपारायण व अन्य वृहत्त यज्ञों के कारण मध्यकालीन यज्ञों की भांति विकृतियां आ जायें और यह यज्ञ सामान्य लोगों से दूर हो जायें।

मनमोहन कुमार आर्य, फोनः 09412985121

सम्पादक के विचार

इस में कोई सन्देह नहीं कि इन यज्ञों के कारण जो आर्य समाज के असली मुददे थे जिन के लिये महर्षि दयानन्द व उनके शुरू के अनुयाइयों ने संघर्ष किया था वे ओझिल हो चुके हैं। इसी कारण आज का पढा़ लिखा वर्ग यहां तक कि जिनके माता पिता कटर आर्य समाजी थे वे अव आर्य समाज नहीं जाते और दूसरे मतो में जा रहें हैं।हवन या फिर संस्कृत व हिन्दी का प्रचार या वेदों की बात तो दूसरे मत भी करते है और बढ़ चढ़ कर कर रहें हैं । अगर आर्य समाज की आत्मा को जीवित रखना है तो उन मुददो पर ही आगे लाना होगा जो हमें दूसरों से अलग करते हैं वे आर्य समाज के नियमों में हैं। जिनका निचोड़ है एक निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा ईश्वर को ही मानना, अन्धविश्वासों से व ज्योतिष आदि को नहीं मानना, विश्व और समाज के कल्याण के लिये लगे रहना, सत्य को सर्वोपरी मानना, वेदों की बातों को समझना और जीवन में धारण करना न कि मन्त्रों को रटते रहना।

इस बारे में महात्मा हंसराज के विचार हमें ठीक रास्ता दिखते है।

वेदों के स्वाध्याय का अर्थ यह नहीं कि कि वेदों के शब्दों की छानबीन करते रहें, अपितु आवश्यकता इस बात की है कि मन्त्रों का स्वाध्याय करके, उनके अर्थो को समझ कर अपनी आत्मा में प्रविष्ठ किया जाये और धारण किया जाये।

प्रत्येक आर्यसमाजी का कर्तव्य है कि वह अपने आचरण द्वारा अपने नगर, कस्वा, ग्राम तथा कुल के लिये एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों की बातों को उनके सामने रखे जो सहस्रों वर्षों के प्श्चात स्वामी दयानन्द ने पुनः खोज कर हमारे सामने रखी थी।

केवल आर्य समाज की सदस्यता हमें न तो आर्य बनाती है न ही मुक्ती दिलायेगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्म और पवित्र आचरण ही दिला सकता है। अच्छे कर्म ही 'यज्ञ है।

महात्मा हंसराज

यह न सोचें कि आप ने उस पर दया कि बल्कि यह सोचें कि उसने आप को कल्याण का कार्य करने का अवसर दिया

One life is all we have, no day that goes by ever comes back. Keep the candle of hope lighted and enjoy life in its full.

एन एस आई सी

NSIC

ISO 9001-2008

www.nsic.co.in

NSIC SCHEMES FOR THE DEVELOPMENT OF SMALL ENTERPRISES

- कच्चा माल खरीद के लिए वित्तिय सहायता
- बैंका के माध्यम से ऋण सहायता
- विपणन सम्बधी सूचना सेवाएं
- इनफोमीडियरी सेवाएं
- कच्चे माल का वितरण
- परियोजनाओं और उत्पादों का निर्यात
- सरकारी भण्डार खरीद कार्यक्रम के अन्तर्गत एकल बिन्दु पंजीकरण
- प्रदशनियां एवं व्यापार मेले

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

एस.सी.ओ. 378, द्वितीय तल, सैक्टर 32 डी, चण्डीगढ़ – 160030
फोन : 0172–2620538, 2620539

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म्।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

आशुतोष सूद, सैक्टर–16, रू.–1,00,000 कमरा बनाने हेतु दान मे दिए

डा. मधु राका ने अपने पिता श्री वी आर गुप्ता की स्मृती पे रू. 1,25,000 कमरा बनाने हेतु दान मे दिए

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

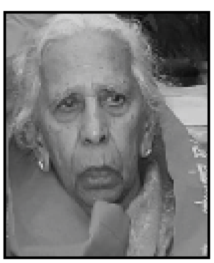

Smt. Prem Kanti Arora

Smt. Tara Devi

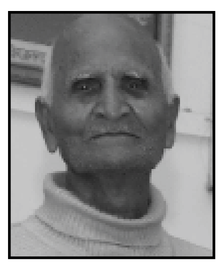

Sh. Brahm Dev Bahl

Sh. Ram Lal Kalra

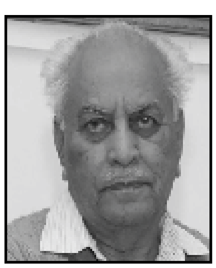

Sh. Balbir Singh Chauhan

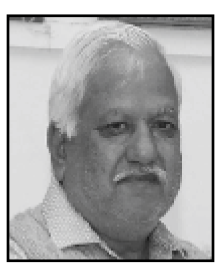

Sh. Vinay Sethi

S. Gurprem Singh

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh 9217970381 and 0172-2662870